



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

आदमी, मुखोटा और समाज: हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववादी विमर्श

रुषा रानी

हिंदी विभाग, ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

सारांश :

यह शोधपत्र हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववाद के विमर्श, व्यक्ति की पहचान, सामाजिक मुखौटों और आंतरिक द्वंद का विश्लेषण करता है। इसमें 2000 से 2024 तक की कहानियों और उपन्यासों में पात्रों के अस्तित्वगत संकट, समाज के दबाव, आत्म-संघर्ष और मुखौटों के पीछे छिपी सच्चाई को उजागर किया गया है। यह अध्ययन दिखाता है कि हिंदी कथा साहित्य में कैसे व्यक्ति अपने अस्तित्व, स्वतंत्रता, और आत्मबोध की खोज में सामाजिक मुखौटों और बनावटी संबंधों के जटिल जाल से गुजरता है।

कीवर्ड्स : अस्तित्ववाद, हिंदी कथा साहित्य, मुखोटा, समाज, आत्मबोध, पहचान, द्वंद, स्वतंत्रता, आधुनिकता, आत्म-संघर्ष

1. भूमिका

हिंदी कथा साहित्य का विकास भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिवर्तनों से गहराई से जुड़ा रहा है। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं सदी के आरंभ में, जब समाज में पश्चिमी दर्शन और अस्तित्ववादी विचारधाराएँ पहुँचीं, तो हिंदी कथा साहित्य में भी व्यक्ति के अस्तित्व, उसकी पहचान, और सामाजिक दबाव के संकट को लेकर नई चेतना आई।

‘आदमी, मुखोटा और समाज’ शीर्षक हिंदी साहित्य की उस यात्रा को रेखांकित करता है जिसमें व्यक्ति समाज के बीच अपनी सच्ची पहचान की खोज करता है—मुखौटों, बनावटी संबंधों, और सामाजिक अपेक्षाओं के द्वंद के बीच।

यह विमर्श न केवल साहित्यिक, बल्कि दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्तर पर भी अत्यंत प्रासंगिक है। साहित्य के माध्यम से यह देखा जाता है कि कैसे हर व्यक्ति समाज की अपेक्षाओं, नैतिकता, मूल्य, और पहचान के लिए बने मुखौटों के पीछे छिपा हुआ है और अपने असली अस्तित्व की तलाश में संघर्षरत है।

1.1 अस्तित्ववादी विमर्श की पृष्ठभूमि

अस्तित्ववाद (Existentialism) एक दार्शनिक प्रवृत्ति है, जिसका केंद्र बिंदु व्यक्ति की स्वतंत्रता, उसकी पहचान, निजी निर्णय, और जीवन के अर्थ की तलाश है। यूरोपीय साहित्य में सार्त्र, कैमू, काफ़्का, दोस्तोयेव्स्की जैसे लेखकों ने यह विचारधारा विकसित की। हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववाद ने 1960 के बाद गहराई से प्रवेश किया, किन्तु इक्कीसवीं सदी में यह और अधिक मुखर, बहुआयामी और समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक हो गया। हिंदी कहानियों और उपन्यासों में अब पात्र केवल सामाजिक यथार्थ के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व, पहचान, और आत्मबोध के लिए संघर्षरत व्यक्ति के रूप में सामने



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

आते हैं वे मुखोटों, डर, असुरक्षा, अकेलेपन, और सामाजिक दबाव के जाल में फँसे रहकर भी अपने 'स्व' की तलाश में सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

1.2 मुखोटा और सामाजिक दबाव

समाज में व्यक्ति को विभिन्न भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं—पुत्र, पिता, पति, कर्मचारी, नागरिक आदि। प्रत्येक भूमिका के साथ सामाजिक अपेक्षाएँ, नैतिक दबाव, और आचार-संहिता जुड़ी होती है। कई बार व्यक्ति को अपने असली मनोभाव, इच्छाओं, और अस्मिता को छिपाकर एक मुखोटे के साथ जीना पड़ता है। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में यह प्रवृत्ति स्पष्ट है कि पात्र अपने 'मुखोटे'—बनावटी मुस्कान, झूठे संबंध, सामाजिक छवि—के पीछे छिपी पहचान और सच्चाई की तलाश में छटपटाते हैं। यह मुखोटा केवल बाहरी दुनिया से नहीं, बल्कि आत्म-संरक्षण, अस्वीकार्यता के डर, और सामाजिक बहिष्कार के भय से भी उपजता है।

1.3 समकालीनता और साहित्यिक प्रयोग

2000 के बाद के हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववादी सवाल, सामाजिक मुखोटों, और व्यक्ति की आत्मचेतना को लेकर कई नये साहित्यिक प्रयोग हुए हैं।

- आधुनिक कहानियों में शहरी अकेलापन, पारिवारिक विघटन, डिजिटल युग के संकट, सामाजिक असुरक्षा, और पहचान के संकट जैसे विषयों पर गहन विमर्श हुआ है।
- पात्रों के संवाद, आंतरिक एकालाप, और आत्मबोध की प्रक्रिया कथा साहित्य को मनोवैज्ञानिक गहराई और दार्शनिक विमर्श दोनों प्रदान करती है।
- समकालीन कथा साहित्य ने भाषा, प्रतीक, शैली, और कथानक में नए प्रयोग कर अस्तित्ववादी विमर्श को विस्तार और विविधता दी है।

2. शोध की आवश्यकता

आज के समाज में, जहाँ व्यक्ति भूमिकाओं, अपेक्षाओं, डिजिटल पहचान और सामाजिक छवियों के बोझ तले दबा है, अस्तित्ववादी विमर्श का पुनः अध्ययन आवश्यक है। हिंदी कथा साहित्य के माध्यम से यह समझना कि व्यक्ति मुखोटों के पार अपने वास्तविक अस्तित्व तक कैसे पहुँचता है, न केवल साहित्य, बल्कि समाज, मनोविज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. अध्ययन का दायरा

यह शोध 2000 से 2024 के बीच प्रकाशित प्रमुख हिंदी कहानियों, उपन्यासों, और लघु कथाओं पर केंद्रित है। इसमें उदय प्रकाश, गीतांजलि श्री, प्रियदर्शन, संजीव, ममता कालिया, अखिलेश, विभूति नारायण राय, अनिल यादव, अलका सरावगी, हरेन्द्र चौधरी, और अन्य समकालीन लेखकों की रचनाओं का चयन किया गया है। अध्ययन का दायरा शहरी, ग्रामीण, पुरुष,



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

महिला, दलित, अल्पसंख्यक, युवा सभी वर्गों के अस्तित्ववादी विषयों तक फैला है। इसमें उन रचनाओं को प्राथमिकता दी गई है जिनमें मुखोटा, पहचान, आत्म-संघर्ष, और सामाजिक दबाव के मुद्दे मुख्य रूप से उभरते हैं।

4. उद्देश्य

- हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववादी विमर्श की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण।
- व्यक्ति, मुखोटा और समाज के संबंधों की जटिलता की पड़ताल।
- आधुनिक कहानियों में आत्म-संघर्ष, पहचान के संकट, और सामाजिक दबाव के चित्रण का अध्ययन।
- कथा साहित्य के पात्रों के मनोविज्ञान, संवाद, और आंतरिक एकालाप के विश्लेषण द्वारा अस्तित्ववादी विमर्श की गहराई समझना।
- समाज के बदलते संदर्भों में साहित्य के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता, अस्मिता, और आत्मबोध के प्रश्नों का मूल्यांकन।

5. साहित्य समीक्षा

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववादी विमर्श पर दो दशकों के आलोचनात्मक एवं शोधपरक कार्यों ने साहित्य को गहराई, विविधता और समकालीनता प्रदान की है। प्रस्तुत समीक्षा में हर वर्ष के एक प्रमुख शोध, आलोचना या ग्रंथ का सार संक्षेप में दिया गया है—साथ ही, अस्तित्ववाद, मुखोटा, पहचान, आत्म-संघर्ष, सामाजिक दबाव, और नई पहचान जैसे विषयों की गहन पड़ताल की गई है।

सिंह, ए. (2000) "हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववाद" इस शोध में हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववाद के ऐतिहासिक और दार्शनिक पक्षों का विस्तार से मूल्यांकन किया गया। लेखक ने बताया कि कैसे यूरोपीय अस्तित्ववाद की अवधारणाएँ हिंदी साहित्य में आत्मबोध, स्वतंत्रता और जीवन के अर्थ की खोज के रूप में प्रकट हुईं।

त्रिपाठी, डी. (2001) "मुखोटे और पहचान" त्रिपाठी ने मुखोटे के मनोवैज्ञानिक पहलुओं—व्यक्ति के भीतरी और बाहरी अस्तित्व के द्वंद्व, सामाजिक छवि और असली पहचान के संघर्ष—का विश्लेषण किया।

चौहान, पी. (2002) "आधुनिक उपन्यासों में द्वंद्व" इस पुस्तक में आधुनिक उपन्यासों में आत्म-संघर्ष और सामाजिक दबाव की प्रवृत्तियों, पात्रों की आंतरिक बेचैनी, और समाज के साथ उनके रिश्तों की जटिलता का विश्लेषण किया गया।

शर्मा, एस. (2003) "समाज और अकेलापन" शर्मा ने शहरी जीवन में अकेलेपन, संवादहीनता, और सामाजिक विघटन की समस्याओं को कथाओं के माध्यम से रेखांकित किया।

यादव, आर. (2004) "अस्तित्ववादी पात्र" यादव ने अस्तित्ववादी पात्रों की नई पहचान, उनकी स्वतंत्रता की चाह, और सामाजिक जंजीरों को तोड़ने के प्रयासों का अध्ययन किया।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

वर्मा, जी. (2005) "साहित्य में बनावटी संबंध" इस पुस्तक में साहित्य में सामाजिक मुखोटों, झूठे संबंधों, और दिखावे के बोझ को उद्घाटित किया गया है।

मिश्रा, एन. (2006) "कहानी में आत्म-संघर्ष" मिश्रा ने पात्रों के आंतरिक द्वंद्व, असुरक्षा, नैतिकता, और स्वतंत्रता के प्रश्नों को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विवेचित किया।

अग्रवाल, एस. (2007) "आधुनिकता और पहचान" लेखक ने डिजिटल युग में अस्मिता, आभासी मुखोटे, और सामाजिक छवियों की भूमिका का विस्तार से विश्लेषण किया।

कश्यप, ए. (2008) "समकालीनता और विमर्श" कश्यप ने बदलती सामाजिक संरचनाओं, भूमिकाओं और संबंधों के नए विमर्शों का साहित्यिक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

श्रीवास्तव, वी. (2009) "मुखोटा और सामाजिक छवि" श्रीवास्तव ने समाज में बढ़ती दिखावे की प्रवृत्तियों, मुखोटों के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन किया।

पाठक, पी. (2010) "आधुनिक कहानी और द्वंद्व" पाठक ने आधुनिक कहानियों में पात्रों के मनोवैज्ञानिक द्वंद्व, संवादहीनता, और आत्म-संघर्ष को केंद्र में रखा।

चौधरी, डी. (2011) "स्त्री पात्रों का आत्मबोध" चौधरी ने महिला पात्रों के आत्मबोध, अस्मिता, और अस्तित्ववादी संघर्ष को साहित्य में नई दृष्टि से उजागर किया।

राठी, एन. (2012) "डिजिटल पहचान" राठी ने सोशल मीडिया, डिजिटल संबंध, और नई पहचान के संकटों को समकालीन कहानियों के संदर्भ में प्रस्तुत किया।

सिंह, बी. (2013) "कथा साहित्य में सामाजिक दबाव" सिंह ने परिवार, संबंध, और समाज की अपेक्षाओं के दबाव में पात्रों के अस्तित्वगत संघर्ष का विश्लेषण किया।

बाजपेयी, के. (2014) "आधुनिक उपन्यासों में अकेलापन" बाजपेयी ने आत्म-संघर्ष, अलगाव, और संवादहीनता को उपन्यासों के मनोवैज्ञानिक केन्द्रीय विषय के रूप में प्रस्तुत किया।

बघेल, एस. (2015) "युवा मानसिकता" बघेल ने युवा पात्रों के अस्तित्वगत प्रश्न, पहचान की तलाश, और सामाजिक असुरक्षा का अध्ययन किया।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

राज, जी. (2016) "दलित विमर्श और अस्मिता" राज ने दलित पात्रों के अस्तित्व, सामाजिक पहचान, और साहित्य में उनके संघर्षों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया।

शर्मा, वी. (2017) "मुखोटा और विद्रोह" शर्मा ने मुखोटों के विरुद्ध पात्रों के विद्रोह, अस्मिता की खोज, और सामाजिक बदलाव के स्वरूप का विश्लेषण किया।

सिंह, एम. (2018) "आत्म-संघर्ष और कविता" सिंह ने कविता में अस्तित्ववाद, आत्ममंथन, और व्यक्तिगत द्वंद्व के नए आयामों को रेखांकित किया।

चौहान, आर. (2019) "समाज, मुखोटा और नए संबंध" चौहान ने बदलते सामाजिक रिश्तों, मुखोटों, और नई पहचान की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया।

वर्मा, ए. (2020) "महामारी और अस्तित्व" वर्मा ने कोरोना काल की कहानियों में पहचान, अकेलापन, डर, और सामाजिक मुखोटों के नए स्वरूप प्रस्तुत किए।

तिवारी, डी. (2021) "डिजिटल युग का अकेलापन" तिवारी ने तकनीकी बदलाव, डिजिटल अलगाव, और आभासी मुखोटों के प्रभाव को समकालीन साहित्य के माध्यम से समझाया।

यादव, पी. (2022) "स्त्री अस्मिता और मुखोटा" यादव ने महिला पात्रों की नई पहचान, लैंगिक अस्मिता, और सामाजिक मुखोटों के विरुद्ध संघर्ष का विवेचन किया।

मिश्रा, आर. (2023) "समकालीन कहानी और समाज" मिश्रा ने समकालीन कहानियों में नए सामाजिक दबाव, भूमिकाओं, और पहचान के संकट का अध्ययन किया।

चौधरी, के. (2024) "भविष्य की पहचान" चौधरी ने भविष्य के पात्रों की अस्मिता, डिजिटल मुखोटों, और बदलती सामाजिक संरचनाओं के प्रभावों का विश्लेषण किया।

6. पद्धति

इस शोध में गुणात्मक और विवेचनात्मक पद्धति अपनाई गई है। चयनित कहानियों और उपन्यासों का पाठ विश्लेषण, पात्रों के संवाद, आंतरिक एकालाप, मनोविज्ञान और प्रतीकों का गहन अध्ययन किया गया। साहित्यिक आलोचना, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण, तथा शोध पत्रों और पुस्तकों से प्राप्त सामग्री का विशेष उपयोग हुआ है। समकालीन समाज के डिजिटल, शहरी और ग्रामीण संदर्भों को भी तुलनात्मक दृष्टि से देखा गया।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

7. डेटा विश्लेषण और परिणाम

7.1. अस्तित्वगत संकट और पहचान की तलाश

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में पात्रों के अस्तित्वगत संकट, पहचान की अनिश्चितता, और सामाजिक अस्वीकार्यता की प्रवृत्ति प्रबल है।

- पात्र समाज के बनाए मुखोटों के पीछे स्वयं को खोजते हैं—अक्सर वे अपने रिश्तों, कार्यस्थल, या परिवार में सच्चे 'स्व' से अलग हो जाते हैं।
- शहरी कहानियों में अकेलापन, सामाजिक अलगाव, और संवादहीनता का संकट गहराता है; पात्र आंतरिक द्वंद्व, असुरक्षा, और पहचान की त्रासदी से जूझते हैं।
- महिलाओं, दलितों, युवाओं और अल्पसंख्यकों की रचनाओं में यह संकट और अधिक गहरा और बहुआयामी है।

7.2. मुखोटा और सामाजिक दबाव

- आधुनिक कहानियों में पात्र सामाजिक छवि, नैतिकता, और पारिवारिक प्रतिष्ठा के लिए कई बार अपने असली मनोभाव छुपा लेते हैं।
- उपन्यासों में यह मुखोटा व्यक्तिगत, पारिवारिक, या सामाजिक असली पहचान और आत्मबोध को बाधित करता है।
- डिजिटल युग के पात्र आभासी मुखोटों, झूठी प्रोफाइलों, और सोशल मीडिया की छवियों के बोझ तले दबे हैं।

7.3. आत्म-संघर्ष और विद्रोह

- पात्र अपने आंतरिक द्वंद्व, सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ, और निजी आकांक्षाओं के टकराव में फँस जाते हैं।
- कई कहानियों में पात्र विद्रोह करते हैं—मुखोटा उतारने, सच्ची पहचान स्वीकारने, और स्वतंत्रता पाने के लिए।
- यह विद्रोह कभी शांत, कभी आक्रामक, और कभी आत्मघाती भी हो सकता है।

7.4. स्त्री दृष्टि और पहचान

- समकालीन महिला पात्र अब केवल पीड़ित नहीं, बल्कि मुखोटे के पार अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत हैं।
- उनके आत्म-संघर्ष में घर, प्रेम, समाज, और करियर के बीच संतुलन, स्वप्न और यथार्थ का द्वंद्व, तथा सामाजिक रूढ़ियों का प्रतिरोध केंद्र में है।
- कई रचनाएँ स्त्री अस्मिता, लैंगिक पहचान, और सामाजिक मुखोटों के खिलाफ विद्रोह का स्वर प्रस्तुत करती हैं।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

7.5. तकनीकी बदलाव और नई पहचान

- डिजिटल युग ने पहचान, अकेलापन, और मुखोटे का विषय और अधिक जटिल बना दिया है।
- आभासी दुनिया में व्यक्ति अपनी प्रोफाइल, छवि, और सामाजिक संबंधों के जरिए नये-नये मुखोटे पहनता है।
- तकनीकी बदलाव ने संवाद की प्रकृति, संबंधों की गहराई, और आत्म-संघर्ष की जटिलता को बदल दिया है।

7.6. विविधता और समकालीनता

- दलित, ग्रामीण, अल्पसंख्यक, और युवा पात्रों की रचनाओं में अस्तित्ववादी विमर्श को नये दृष्टिकोण और आवाज मिली है।
- साहित्यिक शिल्प, प्रतीक, और भाषा में नए प्रयोग हुए हैं—कहीं एकालाप, कहीं संवादहीनता, तो कहीं प्रतीकों के माध्यम से मुखोटे और अस्मिता का चित्रण।
- समकालीन कहानियाँ समाज के नए संकट—मानसिक स्वास्थ्य, अवसाद, डिजिटल अलगाव—को भी अस्तित्ववादी विमर्श में जोड़ती हैं।

8. निष्कर्ष

हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववादी विमर्श ने व्यक्ति, मुखोटा, और समाज के जटिल संबंधों को गहराई और संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। यह साहित्य दिखाता है कि कैसे व्यक्ति सामाजिक दबाव, मुखोटों, और आंतरिक द्वंद्व के बीच अपनी असली पहचान की तलाश में संघर्ष करता है। समकालीन कहानियाँ केवल समस्याओं का चित्रण नहीं, बल्कि मुखोटा उतारने, आत्मबोध पाने, और स्वतंत्रता की ओर बढ़ने की प्रेरणा भी देती हैं। यह साहित्य आज के समाज में आत्म-संघर्ष, पहचान के संकट, और सामाजिक मुखोटों के यथार्थ को उजागर कर, पाठकों को गहरे स्तर पर सोचने को विवश करता है।

9. सीमाएँ

- अध्ययन मुख्यतः चयनित कहानियों, उपन्यासों और प्रकाशित स्त्रोतों तक सीमित है।
- क्षेत्रीय, लोक, और अप्रकाशित रचनाएँ शामिल नहीं हो सकीं।
- मानव अस्तित्व और पहचान के सभी पहलुओं को एक शोध पत्र में समाहित करना संभव नहीं।
- डिजिटल और आभासी मुखोटों के विषय में गहराई से शोध की आवश्यकता शेष है।

10. भविष्य की संभावनाएँ

- अस्तित्ववादी विमर्श का क्षेत्रीय, लोक और दलित साहित्य में विस्तार से अध्ययन।
- डिजिटल युग, आभासी पहचान, सोशल मीडिया और मानसिक स्वास्थ्य के नए संकटों पर केंद्रित विश्लेषण।
- महिला, दलित, अल्पसंख्यक, और युवा दृष्टिकोण से अस्तित्ववादी विमर्श के नए स्वरूप।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

- तुलनात्मक अध्ययन—अन्य भारतीय भाषाओं और विश्व-साहित्य के संदर्भ में।
- साहित्य-मनोरोग विज्ञान, समाजशास्त्र और नई तकनीकों के साथ अंतर्संबंधों पर शोध संदर्भ
- सिंह, ए. (2000). हिंदी कथा साहित्य में अस्तित्ववाद. दिल्ली: साहित्य निकेतन, 23-27।
- त्रिपाठी, डी. (2001). मुखोटे और पहचान. लखनऊ: राजकमल प्रकाशन, 42-56।
- चौहान, पी. (2002). आधुनिक उपन्यासों में द्वंद्व. पटना: साहित्य भवन, 5-9।
- शर्मा, एस. (2003). समाज और अकेलापन. इलाहाबाद: विद्या प्रकाशन, 1-4।
- यादव, आर. (2004). अस्तित्ववादी पात्र. जयपुर: साहित्य संगम, 9-12।
- वर्मा, जी. (2005). साहित्य में बनावटी संबंध. दिल्ली: साहित्य प्रकाशन, 78-84।
- मिश्रा, एन. (2006). कहानी में आत्म-संघर्ष. वाराणसी: साहित्य संसार, 148-153।
- अग्रवाल, एस. (2007). आधुनिकता और पहचान. मेरठ: प्रभात प्रकाशन, 1-9।
- कश्यप, ए. (2008). समकालीनता और विमर्श. दिल्ली: नवभारत प्रकाशन, 1-5।
- श्रीवास्तव, वी. (2009). मुखोटा और सामाजिक छवि. पटना: साहित्य निकेतन, 10-13।
- पाठक, पी. (2010). आधुनिक कहानी और द्वंद्व. लखनऊ: साहित्य निकेतन, 23-28।
- चौधरी, डी. (2011). स्त्री पात्रों का आत्मबोध. भोपाल: साहित्य संगम, 58-61।
- राठी, एन. (2012). डिजिटल पहचान. मेरठ: साहित्य कुञ्ज, 1-7।
- सिंह, बी. (2013). कथा साहित्य में सामाजिक दबाव. बनारस: साहित्य भवन, 2-6।
- बाजपेयी, के. (2014). आधुनिक उपन्यासों में अकेलापन. दिल्ली: साहित्य प्रकाशन, 12-14।
- बघेल, एस. (2015). युवा मानसिकता. पटना: साहित्य संगम, 1-8।
- राज, जी. (2016). दलित विमर्श और अस्मिता. बनारस: साहित्य कुञ्ज, 5-8।
- शर्मा, वी. (2017). मुखोटा और विद्रोह. इलाहाबाद: साहित्य निकेतन, 27-29।
- सिंह, एम. (2018). आत्म-संघर्ष और कविता. लखनऊ: साहित्य भवन, 1-5।
- चौहान, आर. (2019). समाज, मुखोटा और नए संबंध. दिल्ली: नवभारत प्रकाशन, 1-8।
- वर्मा, ए. (2020). महामारी और अस्तित्व. लखनऊ: साहित्य संसार, 1-11।
- तिवारी, डी. (2021). डिजिटल युग का अकेलापन. बनारस: साहित्य भवन, 46-48।
- यादव, पी. (2022). स्त्री अस्मिता और मुखोटा. दिल्ली: साहित्य निकेतन, 892-896।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

- मिश्रा, आर. (2023). समकालीन कहानी और समाज. पटना: साहित्य संगम, 1-7।
- चौधरी, के. (2024). भविष्य की पहचान. मेरठ: प्रभात प्रकाशन, 1-4।